International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

भारतीय इतिहास में बिहार राज्य का ऐतिहासिक महत्व

भयाम मूर्ति भारती

(नेट–यू॰जी॰सी॰)

(पी–एच॰डी– ल॰ ना॰ मिथिला वि वविद्यालय, दरभंगा, बिहार)

इतिहास

विषय प्रवे ा:

बिहार क्षेत्र प्राचीन काल में बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा है। इस क्षेत्र में प्राचीन समय में बौद्ध मठों अर्थात विहारों की अधिकता थी जिसके कारण इस क्षेत्र का नाम बिहार पड़ा। वर्तमान समय में बिहार राज्य की राजधानी पटना है। प्राचीन काल में पटना को पाटलिपुत्र, पुश्पपुर तथा कुसुमपुर आदि नामों से सम्बोधित किया जाता था। कालान्तर में पटना को अजीमाबाद भी नाम दिया गया।

बिहार के सम्बंध में जानकारी हेतु कई प्राचीन कालीन ऐतिहासिक स्त्रोत उपलब्ध हैं जिनसे बिहार के बारे में बोध होता है। इन प्राचीन कालीन ऐतिहासिक स्त्रोतो में साहित्यिक साक्ष्य, पुरातात्विक साक्ष्य एवं यात्रा वृत्तंत आदि आते है। साहित्यिक साक्ष्यों में ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, पुराण, रामायण, महाभारत, बौद्ध धर्म से सम्बंधित ग्रंथ एवं कौटिल्य का अर्थ ाास्त्र आदि प्रमुख है। बिहार क्षेत्र का पहली बार उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। ऋग्वेद में बिहार क्षेत्र के लिए कीकट अर्थात किरात भाब्द का प्रयोग किया गया है तथा अथर्ववेद एवं पंचवि ा में बिहार क्षेत्र मे रहने वाले लोगों हेतु व्रात्य भाब्द का प्रयोग किया गया है।

बिहार क्षेत्र में आर्यों के आगमन एवं विस्तार का वर्णन भातपथ ब्राह्मण में उल्लेखित विदेह माधव की कथा में मिलता है जिसके अनुसार माधव अपने पुत्र गौतम राहुगण के साथ अग्नि का पीछा करते हुए सदानीरा नदी तक पहुँचे तथा जंगलों को नश्ट किया। सदानीरा नदी को वर्तमान में गंडक के नाम से सम्बोधित किया जाता है। बिहार क्षेत्र से सम्बंधित कई भाासकों का उल्लेख भी भातपथ ब्राम्हण में मिलता है।

अनेक बौद्ध साहित्यों जैसे– दीपवं ा, महावं ा, अंगुत्तर निकाय, दीर्घ निकाय, विनयपिटक तथा दिव्यावदान आदि से भी बिहार क्षेत्र के सम्बंध में जानकारी प्राप्त होती है। दिव्यावदान में ह्वेनसांग द्वारा नालन्दा वि वविद्यालय में अध्ययन करने तथा इत्सिंग द्वारा विक्रम ि ाला वि वविद्यालय, नालन्दा वि वविद्यालय तथा तत्कालीन भारत की द ाा का वर्णन किया गया है। सेल्यूकस निकेटर का दूत तथा यूनानी यात्री मेगस्थनीज मौर्य भाासक चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था। तथा उसने अपने भारत यात्रा का वर्णन इण्डिका नामक ग्रन्थ में किया है। बिहार के इतिहास के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण स्त्रोत संध्याकर–नन्दी की रचना रामचरित तथा तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ की रचना बौद्ध धर्म का इतिहास भी है।

किसी भी इतिहास के सन्दर्भ में पुरातात्विक साक्ष्य जानकारी के महत्वपूर्ण स्त्रोत होते है। ये स्त्रोत बिहार के सन्दर्भ में भी प्रासंगिक है। इन पुरातात्विक स्त्रोतों में विभिन्न अभिलेख, स्तम्भ, मृदभाण्ड, सिक्के तथा उपकरण आदि भाामिल है।

बिहार के सन्दर्भ में जानकारी हेतु अनेक पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध हैं जिनमें विभिन्न स्थानों से प्राप्त पुरापाशाण कालीन, मध्य पाशाणकालीन एवं नवपाशाणकालीन वस्तुएँ महत्त्वपूर्ण हैं। बिहार के मुंगेर जिले से पुरापाशाण एवं मध्य पाशाणकालीन, पटना जिले के मनेर सारण जिले के चिरांद, वै ाली जिले के चेचर, रोहतास जिले के सेनुआर से अनेक ताम्र पाशण युगीन मृदभांड एवं वस्तुएँ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

प्राप्त हुई हैं। सारण जिले के चिरांद, वै ाली जिले के चेचर, मुंगेर जिले के भीमबाँध तथा गया जिले के केउर से नव पाशाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं।

छठी भाताब्दी ई॰ पू॰ में आर्य जातियों के विलीनीकरण से अनेक जनपदों का विस्तार हुआ, जो कालान्तर में महाजनपद बने। बौद्ध ग्रन्थ महावस्तु एवं अंगुतर निकाय तथा जैन ग्रन्थ भगवती सूत्र से 16 महाजनपदों की सूचना मिलती है। इन 16 महाजनपदों में से तीन सबसे भाक्ति ाली महाजनपद मगध, अंग तथा वज्जि बिहार में अवस्थित थे। वज्जि आठ राज्यों का संघ था। वज्जि संघ की राजधानी वै ाली थी। अश्टकुल में वै ाली के लिच्छवि, मिथिला के विदेह तथा कुण्डग्राम के ज्ञातृक आदि सम्मिलित थे। वि व में पहली बार गणतंत्र की स्थापना वै ाली में 750 ई॰ पू॰ में हुई थी। बौद्ध ग्रन्थ महावग्ग जातक में वै ाली को एक समृद्ध नगर के रूप में अंकित किया गया है।

जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म वै ाली के कुंडग्राम नामक स्थान पर हुआ था। महावीर के पिता सिद्धार्थ वज्जि संघ के ज्ञातृक कुल के प्रधान थे तथा माता त्रि ाला लिच्छवी भाासक चेटक की बहन थी। महावीर स्वामी ने वै ाली में चतुर्मास व्यतीत किया था। वै ाली का सम्बंध बौद्ध धर्म से भी था। यह महात्मा बुद्ध की प्रिय नगरी के रूप में जानी जाती थी। वै ाली में ही गौतम बुद्ध ने महिलाओं को संघ में प्रवे ा की अनुमति दी थी। तथा वै ाली की नगरवधू आम्रपाली के घर भोजन किया था। 383 ई॰ पू॰ में वै ाली में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ था, जिसकी अध्यक्षता साबकमीर ने की थी।

महाजनपद काल के सबसे भाक्ति ाली महाजनपद मगध का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। दक्षिण बिहार क्षेत्र में अवस्थित मगध महाजनपद की राजधानी प्रारम्भ में गिरिव्रज थी। किन्तु कालान्तर में पांच पहाड़ियों से घिरी राजगृह इसकी राजधानी बनी। मगध साम्राज्य के भाासक उदयिन ने पाटलिपुत्र नामक नगर की स्थापना की तथा राजधानी को राजगृह से पाटलिपुत्र में स्थानान्तरित किया। मगध महाजनपद के अन्तर्गत वर्तमान काल के पटना तथा गया जिले सम्मिलित थे।

उत्तर दि ाा में गंगा, दक्षिण में विंध्य पर्वत, पूर्व में चम्पा तथा प ि चम में सोन नदी की भौगोलिक सीमा में अवस्थित मगध साम्राज्य के उत्कर्श से भारतीय इतिहास में एक नये युग का आरम्भ हुआ। मगध साम्राज्य के उत्कर्श हेतु कई कारक उत्तरदायी थे। मगध साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र गंगा, गंडक तथा सोन नदियों के तट पर अवस्थित होने से सामरिक रूप से तो सुरक्षित था ही, नदियों से व्यापार वाणिज्य में व्यापक रूप से सहायता मिली। मगध के दक्षिण में छोटानागपुर की पहाड़ी अवस्थित होने के कारण इस क्षेत्र में खनिज संसाधन की उपलब्धता थी, जो आर्थिक उन्नति में सहायक बने। छोटानागपुर की पहाड़ी से रथ हेतु लकड़ी तथा युद्ध में प्रयोग होने वाले हाथी मिलने लगे। मगध क्षेत्र का वि ाल उपजाऊ मैदान, कृशि में लोहे एवं नवीन तकनीको के प्रयोग तथा यहाँ के रूढी विरोधी समाज ने साम्राज्य के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। मगध साम्राज्य के विस्तार तथा उसके सुदृढीकरण में प्रमुख भूमिका मगध के भाासकों बिम्बिसार, अजात ात्रु तथा नंद वं ा के भाासक महापद्मनंद की रही।

मगध पर सर्वप्रथम हर्यक वं ा ने भाासन किया। कालान्तर में नंद वं ा के भाासक धनानंद को पराजित कर चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य वं ा की स्थापना की। चन्द्रगुप्त मौर्य मुक्तिदाता के नाम से जाना जाता है। मौर्य वं ा में सम्राट अ ाोक एक महान एवं प्रतापी भाासक हुआ। यह भारतीय इतिहास का ऐसा प्रथम भाासक था जिसने ि ालालेखों के माध्यम से जनता को सम्बोधित किया। अ ाोक के भाासनकाल की सर्वप्रमुख घटना कलिंग का युद्ध था। कलिंग के युद्ध में भीशण नरसंहार को देख कर अ ाोक ने सदा के लिए युद्ध नीति को त्याग दिया। सम्राट अ ाोक ने नैतिक आचारों की एक संहिता बनायी, जिसे धम्म नीति के रूप में जाना जाता है। सही अर्थों में अ ाोक प्रथम राश्ट्रीय सम्राट था, जिसने वि व इतिहास में भारत का नाम दर्ज कराया। सम्राट अ ाोक के भाासनकाल में पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ था बौद्ध ग्रन्थों से प्राप्त सूचना के अनुसार सम्राट अ ाोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था, तथा उसने 84 हजार स्तूपों का निर्माण करवाया था।

बिहार के चम्पारण में अ ाोक के स्तंभ लेख मिले है। अ ाोक ने अपने जीवनकाल में महात्मा बुद्ध के चरणों से पवित्र हुए स्थानों की यात्रा की तथा उन स्थानों पर पूजा की। महात्मा बुद्ध को बोधगया नामक स्थान पर फल्गु (निरंजना) नदी के तट पर बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। बिहार राज्य में अवस्थित बौद्ध धर्म के साथ अन्य सभी धर्मों से जुड़े द ानीय स्थलों को पर्यटन की दृश्टि से विकसित करने हेतु सात सर्किट का निर्माण किया जा रहा है।

बौद्ध धर्म से जुड़े द ान को गुप्त भाासकों द्वारा भी सम्मान प्रदान किया गया। इसी क्रम में गुप्त भाासक कुमारगुप्त द्वारा नालंदा महाविहार की स्थापना की गई, जो कालांतर में ि ाक्षा का प्रमुख केन्द्र बना। पाल भाासक धर्मपाल ने नालंदा वि वविद्यालय के रख–रखाव हेतु 200 गाँवों के राजस्व का दान दिया था, तथा भागलपुर में विक्रम ि ाला वि वविद्यालय की स्थापना की। उत्तर–गुप्त भाासकों ने पाटलिपुत्र को राजधानी बना कर भाासन किया था।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मध्यकालीन बिहार की जानकारी हेतु साहित्यिक एवं पुरातात्विक साक्ष्यों के साथ यूरोपीय यात्रियों के विवरण भी उपलब्ध है। 12 वीं भाताब्दी के अंत में बख्तियार खिलजी ने बिहार पर आक्रमण किया तथा वे बिहार को जीतने वाले प्रथम मुस्लिम विजेता बने। कुछ इतिहासकारों के मतों के अनुसार बख्तियार खिलजी द्वारा ही नालंदा वि ववद्यालय तथा ओदंतपुरी का विना ा किया गया। इल्तुतमि ा ने बिहार क्षेत्र पर आक्रमण कर बिहार ारीफ एवं बाढ़ पर अधिकार किया तथा दिल्ली के प्रथम प्रतिनिधि के रूप में मलिक अलाउद्दीन जानी को बिहार में नियुक्त किया। बिहार को दिल्ली के अधीन करने वाला प्रथम सुल्तान इल्तुतमि ा था। इल्तुतमि ा के प चात बलबन ने दिल्ली की सत्ता को प्राप्त करने के बाद बिहार को बंगाल से पृथक कर दिया।

अलाउद्दीन खिलजी के भाासनकाल में एक महत्वपूर्ण घटना घटी। अलउद्दीन खिलजी तथा दरभंगा के राजा सक्र सिंह के मध्य युद्ध हुआ। किन्तु बाद में दोनों के बीच न सिर्फ समझौता हो गया बल्कि अलाउद्दीन खिलजी के रणथम्भौर अभियान के समय सक्र सिंह ने अलाउद्दीन खिलजी की ओर से युद्ध भी किया। वर्तमान भोजपुर जिले के ाहपुर नामक स्थान पर खिलजी काल के कुछ सिक्के प्राप्त हुए हैं। तुगलक भाासक गयासुद्दीन तुगलक ने बंगाल अभियान से वापसी के समय बिहार में कर्नाट वं ा के अंतिम भाासक हरिसिंह देव को पराजित किया। तुगलक काल में बिहार की राजधानी बिहार भारीफ थी। इस समय संभवतः दरभंगा भाहर का नाम तुगलकपुर किया गया। तुगलक काल के एक प्रमुख प्र ाासक मलिक इब्राहिम अथवा मलिक बयाँ का मकबरा बिहार भारीफ में स्थित है जो अपने वि िाश्ट स्थापत्य कला के कारण जाना जाता है।

सूर साम्राज्य का संस्थापक अफगान वं ीय भोर ाह सूरी था। उसके बचपन का नाम फरीद था। तथा वह सासाराम अथवा सहसराम के जमींदार हसन खाँ का पुत्र था। बिहार में अफगान भाासन की स्थापना भोर ाह द्वारा की गयी थी। एक भोर को मार डालने के कारण बिहार के सुलतान मोहम्मद बहार खाँ लोहानी द्वारा फरीद को भोर खाँ की उपाधि प्रदान की गई। भोर ाह ने पटना में एक दुर्ग का निर्माण करवाया तथा वर्श 1541 में इसे बिहार की राजधानी घोशित किया। बिहार के सासाराम में भोर ाह का मकबरा निर्मित है जो अश्टकोणीय है। भोर ाह को इतिहास में एक कु ाल प्र ाासक के रूप में जाना जाता है। भोर ाह को पट्टा एवं कबूलियत पद्धति प्रारम्भ करने का श्रेय जाता है। भोर ाह ने ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण, सराय एवं डाक चौकियों का निर्माण करा कर यातायात एवं संचार व्यवस्था को सुव्यवस्थित किया। भोर ाह द्वारा किये गए प्र ाासनिक सुधार कार्यों के कारण उसे अकबर का अग्रगामी भाासक माना जाता है।

मुगल भाासन के दौरान वर्श 1574–1580 के बीच बिहार क्षेत्र पर अधिकार स्थापित किया गया। वर्श 1574 में अकबर ने बिहार पर आक्रमण किया। तथा वर्श 1580 में बिहार को मुगल साम्राज्य का एक प्रान्त घोशित किया। बिहार में मुगल भाासन को सुदृढता प्रदान करने हेतु राजा मानसिंह को प्रांतपति के रूप में नियुक्त किया गया। जहाँगीर के भाासन काल में राजकुमार परवेज को बिहार का सूबेदार बनाया जो इस पद को प्राप्त करने वाला प्रथम राजकुमार था। राजकुमार परवेज के प चात औरंगजेब के भाासन काल में राजकुमार अजीम को बिहार का प्रांतपति नियुक्त किया गया। अजीम के बिहार के सूबेदार रहने के दौरान ही उसे एक पुत्र हुआ, जिसका नाम फर्रूखि ायर रखा गया। कालान्तर में फर्रूखि ायर का राज्याभिशेक पटना में ही हुआ।

भारत में जब व्यापारिक कंपनियों का आगमन हुआ तो वे इस क्रम में बिहार भी आए। बिहार में व्यापार के उद्दे य से आनेवाले यूरोपियनों में पुर्तगाली प्रथम थे। बिहार उस समय भाोरा के उत्पादन हेतु प्रसिद्ध था। अतः भाोरा के कारण विभिन्न औपनिवे िाक भाक्तियाँ बिहार आयी। पुर्तगालियों के व्यापार का केन्द्र य़द्यपि बंगाल के हुगली में था किन्तु वे नाव के माध्यम से पटना आवागमन करते थे। पुर्तगालियों के प चात वर्श 1632 में डच व्यापारियों का बिहार आगमन हुआ। इन्होनें वर्तमान पटना कॉलेज के उत्तरी भाग में फैक्ट्री की स्थापना की। भाोरा प्राप्ति के उद्दे य से वर्श 1734 में फ्रांसीसी कंपनियों का बिहार आगमन हुआ। फ्रांसीसी यात्रियों ने तत्कालीन पटना के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारी अपने यात्रा वृतान्त में लिखा है। फ्रांसीसी यात्री ट्रैवर्नियर ने जहाँ पटना को दूसरा सबसे बड़ा नगर बताया वहीं मैनरिक ने तत्कालीन पटना की जनसंख्या दो लाख बतायी है। इस्ट इंडिया कंपनी ने वर्श 1664 में पहली बार जॉब चारनॉक को पटना में नियुक्त किया। औपनिवे िाक नीतियों से असंतुश्ट अवध के नवाब ुजाउद्दौला मुगल बाद ाह भााह आलम द्वितीय एवं बंगाल के अपदस्थ नवाब मीरकासिम की संयुक्त सेना एवं अंग्रेजों के मध्य बक्सर का युद्ध हुआ जिसमें अंग्रेज विजयी रहे।

औपनिवे िाक भाासन की भाोशणकारी नीतियों के विरूद्ध 1857 का विद्रोह हुआ। बिहार में 1857 के विद्रोह का प्रारम्भ तत्कालीन रोहिणी गाँव से हुआ। इस विद्रोह को बिहार क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान किया वीर कुँवर सिंह ने। जिन्होनें 80 वर्श की उम्र में भी अंग्रेजी सेना तथा अंग्रेज सेनापतियों के दाँत खट्टे कर दिए। वीर कुँवर सिंह का अदम्य साहस देख युवा वर्ग के अंदर भी ऊर्जा का संचार हुआ। तथा स्वतंत्रता संग्राम में युवा वर्ग ने अंग्रेजों को कड़ी टक्कर दी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 8 -Issue 10– October 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

वर्श 1917 में एक बड़ी महत्वपूर्ण घटना घटी जब गाँधी जी का बिहार में चम्पारण आगमन हुआ। चम्पारण में अंग्रेजों द्वारा तीनकठिया पद्धति के अन्तर्गत किसानों से अपनी भार्तों पर नील की खेती करवायी जाती थी। तथा कृशकों का भाोशण किया जाता था। कांग्रेस के लखनऊ अधिवे ान में राजकुमार भुक्ल ने गाँधी जी को किसानों की समस्याओं से अवगत कराया। जिसके फलस्वरूप गाँधी जी चम्पारण आए तथा उन्होनें चम्पारण के कृशकों के समर्थन में भारत में अपना प्रथम सत्याग्रह प्रारम्भ किया। गाँधी जी के भाांतिपूर्ण प्रतिरोध तथा किसानों की मांगों को तर्कपूर्वक अंग्रेजी सरकार के समक्ष रखने के परिणामस्वरूप किसानों को तीनकठिया पद्धति से मुक्ति मिली। गाँधी जी द्वारा भारत में किए गए सविनय अवज्ञा के इस प्रथम सफल प्रयोग ने किसानों सहित आंदोलनकारियों के मध्य व्यापक जनाधार बनाया तथा स्वतंत्रता संग्राम हेतु प्रेरित भी किया। भारत की स्वतंत्रता के प चात बिहार के सिवान जिले से सम्बंधित डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम राश्ट्रपति बने।

उपरोक्त विश्ले ाण के प चात निश्कर्शतः यह कहा जा सकता है कि बिहार की धरती प्राचीन काल से ही धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में वि िाश्ट रही है। प्राचीन काल में बिहार में वि वप्रसिद्ध नालंदा वि वविद्यालय की स्थापना गयी थी। बिहार की धरती से सम्बंधित मनीशियों ने भारत को नवीन दि ाा प्रदान की। अतः स्पश्ट है कि बिहार का भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

सन्दर्भ स्त्रोतः

1. अहमद इमत्याज, अहसन कमर (2016), बिहारः एक परिचय, ने ानल पब्लिके ान, पटना।

2. राय विजय कुमार (2008), बिहार एक अवलोकन, विवास पनोरमा प्रका ान, दिल्ली।

3. प्रसाद रमे ा (2016), बिहार, इतिहास कला एवं संस्कृति, पार्वती प्रका ान, पटना।

4. झा द्विजेन्द्रनारायण, श्रीमाली कृश्णमोहन (2005), प्राचीन भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यालय निदे ाालय, दिल्ली वि वविद्यालय

5. कर्ण डॉ. विनय (2017), बिहार सामान्य ज्ञान, लूसेन्ट पब्लिके ान्स, पटना।

6. मोहन सौमित्र (2018), बिहार एक परिचय, मैक ग्रॉ हिल्स एजुके ान (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई।

7. राउत सुरेन्द्र, बिहार एट ए ग्लांस, प्रबोधन पब्लिके ान, दिल्ली।

8. कुमार विजय (1998), बिहार इतिहास एवं संस्कृति, उपकार प्रका ान, आगरा।

9. दास वि ो वर, सिंह राके ा बहादुर, मिश्रा विजय कुमार (2007–08) बिहार एक परिचय, जेनरल बुक एजेन्सी, पटना।

10. बिहार समग्र अवलोकन (2019), दृश्टि पब्लिके ान्स, दिल्ली।